SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-02, Issue-01, September- 2024
www.shikshasamvad.com

महाकवि कबीरदास की रचनाओं का आधुनिक जीवन मूल्यों को परिवर्तित करने में योगदान

महिमा
शोधार्थिनी
ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर, (उ0प्र0)

डॉ0 नवनीता भाटिया
एसोसिएट प्रोफेसर
शोध पर्यवेक्षिका
ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर, (उ0प्र0)

सारांश :–

आज का युग विज्ञान की चरम उपलब्धि का युग है। मानव बुद्धि बल से प्रकृति की शक्तियों को स्वायत्त करने में सक्षम हो गया है। उसने अनेक अज्ञात तथ्यों का पता लगाकर सृष्टि में अपनी सर्वोत्कृष्टता को प्रकट कर लिया है। वह किसी भी शक्ति के सामने अपने आपको निरीह, अक्षम मानने में दीन–हीन समझने को तैयार नहीं है। विश्व की दूरी सिमट गयी है। सुख–सुविधा के अनेक साधन आविष्कृत हो चुके है। यांत्रिकता के प्रभाव से मानवीय सम्बन्धों की मावात्मकता क्षीण हो रही है। पुरानी मान्यताओं तथा मूल्यों की उपयोगिता पर प्रश्नचिन्ह लग गया है, किन्तु उनके स्थान पर नयीं मान्यताओं तथा मूल्यों की प्रतिष्ठा पूरे तौर से नहीं हो पा रही है। भौतिक सुख–समृद्धि की होड़ में मनुष्य. मनुष्य का दुश्मन होता जा रहा है।

महत्वपूर्ण शब्द :– *मानव बुद्धि, सन्तुलन, जीवन मूल्यों, व्यवहार, आदि।*

कबीर अपने जीवनकाल में जिन समस्याओं से जूझ रहे थे, वही समस्यायें रूप बदलकर आज भी मौजूद है। इसलिए कबीर साहित्य की प्राप्तगिकता यथावत् बनी हुई है। कबीर का विशुद्ध भावमूलक तथा मानव समतावादी धर्म आज भी सार्थक है। कबीर ने 600 वर्ष पहले जो संघर्ष छेड़ा था, यदि उसी रूप में आगे बढ़ाया होता तो भारतीय समाज का नक्शा ही कुछ और होता। ऐसे ही निर्भीक एवं जुझारू व्यक्तित्व की आवश्यकता आधुनिक समाज को भी है जो खुलकर सच को सच और झूठ को झूठ कह सके। कबीर की साखियों में वर्तमान जीवन की प्रासंगिकता उभरकर आई है। महात्मा कबीर उन सन्तों एवं भक्ती में से है जिन्होंने मध्यकालीन भारतीय

जीवन को अत्यन्त गहराई से प्रभावित किया है। डॉ पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल ने गाँधी और कबीर नामक ग्रन्थ में यह स्वीकार किया है कि गाँधीजी पर सर्वाधिक गहरा प्रभाव कबीर का था। इनके शब्दों में गाँधीत्व की गंगा का स्रोत कबीर का था। उनके शब्दों में ''गाँधीत्व की गंगा का स्रोत कबीर के उपदेश हैं, जिनको उन्होंने माँ के दूध के साथ आत्मसात् किया था। कबीर के समान गाँधी भी सत्य के पुजारी थे। कबीर की साखियों में वर्तमान जीवन और शिक्षा की झलक बहुधा प्रतीत होती है।

निर्मीकता

कांकर पाथर जोरि के, मस्जिद लियो बनाये।

ता पर मुल्ला बांग दे. बहरो हुआ खुदाये ।।

आस्था

कबीरा कूता राम का, मूत्तिया मोरा नाउँ।

गले राम की जेबड़ी, जित खैवे तित जाऊँ ।।

भक्ति

कबीरा यादल प्रेम का हम परि बरस्या आई।

अन्तर भीगी आत्मा हरी–भरी बन राई ।।

विद्रोही भावना

अरे, इन दोहनू राहे न पाई।

हिन्दू अपनी करे बढ़ाई गागर छुवन न देई।

वेश्या के पाइन तर सोवे वह देखी हिन्दूआई।

मुसलमान के पीर औलिया मुर्गा–मुर्गी खाई ।।

मानता

मौके कहीं ढूँढे बन्ये, मैं तो तेरे पास में।

ना मन्दिर में ना मस्जिद में ना कावे कैलाश में ।।1।।

ममिता मेरा क्या करे, प्रेम उपाड़ी पौलि।

छर सन भया दयाल का सूल भई सुख सौडि ।।2।।

चिन्तन

जल में कुम्म, कुम्भ में जल है. बाहर भीतर पानी।

फूटा कुम्म जल जलहि समाना, यह तथ कहह्यौ गियानी।।

कर्तव्य

माची में ऐसा अपराधी, तेरी भक्ति हेत ना साथी।

करनी कबन आई जग जनम्या, जनम कबन तनु पाया ।।

अपरिग्रह

सोई इतना दीजिए, जा में कुटुम्ब समाय।

मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय ।।

उद्यमशीलता

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।

पल में परलय होयगी, बहुरि करेगी कय।।

बन्धुत्व की भावना

दुइ जगदीश कहा ते आया, कहु कौन भरमाया।

अल्हा राम करीब कैसो, हजरत नाम धराया।।

सत्य

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।

जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप।।

अहिंसा

दिन में राजा रहत है, सात हनत है गाय।

यह तो खून यह बन्दगी, कैसे खसी खुदाय ।।

परोपकार

कली काल तत्काल है. बुरा करो कोम।

अनि बोबे लोहा दाहिणे, बोचे सुलुणता होय ।।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

उपर्युक्त वर्णित मूल्य कबीर की साखियों में विद्यमान है। कबीर का प्रादुर्भाव ऐसे समय में हुआ, जय समाज अनेक बुराइयों से ग्रस्त था। ऐसे में कबीर ने अपनी साखियों के माध्यम से जो उपदेश दिया उनमें निम्न शैक्षिक मूल्य विद्यमान थे–

व्यक्तिगत मूल्य

1. निर्भीकता, 2. विद्रोही भावना, 3. उद्यमशीलता।

सामाजिक मूल्य

1. मानवता 2. चिन्तन, 3. बन्धुत्व।

सांस्कृतिक मूल्य

1. सत्य, 2. अहिंसा, 3 अपरिग्रह।

नैतिक मूल्य

1. कर्तव्य।

आध्यात्मिक मूल्य

1. आस्था, 2. मक्ति।

भले ही कबीर का जन्म आज से 600 वर्ष पूर्व हुआ हो, किन्तु उनकी शिक्षाएँ आज भी प्रासंगिक है। आज उनकी शिक्षाएँ एवं मूल्यों की आवश्यकता तत्कालीन युग की अपेक्षा अधिक है। आज की विद्रोही पीढ़ी कबीर को अपने अधिक समीप समझती है। परिणामतः कबीर की पहचान बढ़ती जा रही है, किन्तु जब तक वर्ग, वर्ण, धर्म, सम्प्रदाय, जाति और नस्ल की दीवारों को बहाती हुई इंसानियत और इंसानी संस्कृति की वह छवि नहीं उभरती जिसे कबीर ने देखा था और अपने युग को निर्मम होते हुए भी दिखाना चाहा था, तब तक तमाम प्रकार के झूठे दावों को मिटाता, गिराता सच्ची मानवता का वह सोता अपना समूचे वेग से नहीं फूटता, जिसके लिए कबीर आजीवन फावड़ा और कुदाल लिये श्रमरत रहे, तब तक कवीर इसी प्रकार उपेक्षित होते रहेंगे। इसी प्रकार त्याज्य बने रहेंगे, इसी प्रकार वे पहचान होंगे। साथ ही मैं इतना कहना चाहूँगी कि जब तक कबीर को नहीं पहचाना जायेगा तब तक धर्म के नाम पर होने वाली हिंसा, दंगा, वैमनस्यता, शत्रुता भी नहीं समाप्त होगी।

कबीर की वाणी अब भी वजनदार धारदार और प्रासगिक है। उनकी विद्रोही चेतना अच भी जनसाधारण में आत्मविश्वास पैदा करने की सामर्थ्य रखती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- कबीरदास और समाज सुधार: शर्मा, रामकिशन (2019). कबीरदास के समाज सुधारक विचार और उनका आधुनिक संदर्भ. दिल्ली: साहित्य निकेतन.
- कबीरदास की जीवन दृष्टि: वर्मा, आर. के. (2020). कबीरदास की जीवन दृष्टि और समकालीन समाज. वाराणसी: काशी हिन्दू विश्वविद्यालय.
- कबीर का भक्ति और सामाजिक संदेश: मिश्र, सुरेश (2018). कबीरदास की भक्ति और आधुनिक जीवन मूल्य. जयपुर: साहित्य भारती.
- कबीरदास और समानता का संदेश: गुप्ता, सुभाष (2021). कबीर के समानता और भाईचारे के संदेश का आधुनिक समाज पर प्रभाव. लखनऊ: उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान.
- कबीरदास और जाति प्रथा: सिंह, अनिल (2017). कबीरदास का जाति प्रथा के प्रति विद्रोह और उसका समकालीन प्रभाव. पटना: बिहार साहित्य परिषद.
- कबीर का मानवतावाद: त्रिपाठी, अजय (2022). कबीरदास के मानवतावादी दृष्टिकोण का आधुनिक समाज पर प्रभाव. दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट.
- कबीर की शिक्षाएँ और आज का समाज: चौधरी, प्रमोद (2019). कबीरदास की शिक्षाओं का आज के जीवन मूल्य में स्थान. मुंबई: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय.
- कबीर और धार्मिक सहिष्णुता: शर्मा, विकास (2021). कबीरदास का धार्मिक सहिष्णुता का संदेश और उसका आधुनिक प्रासंगिकता. चंडीगढ़: साहित्य प्रकाशन.
- कबीर की भाषा और संदेश: गुप्ता, राकेश (2020). कबीरदास की भाषा और उसका समकालीन सामाजिक प्रभाव. जयपुर: साहित्य मंडल.
- कबीरदास का धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण: वर्मा, अनिता (2022). कबीरदास का धर्मनिरपेक्षता पर दृष्टिकोण और आधुनिक समाज. दिल्ली: प्रकाशन विभाग.
- कबीर का सत्य और सरलता का संदेश: पांडे, मनीष (2018). कबीरदास के सत्य और सरलता के संदेश का आधुनिक जीवन पर प्रभाव. वाराणसी: काशी विद्यापीठ.
- कबीरदास का समाज सुधारक व्यक्तित्व: तिवारी, मोहित (2020). कबीरदास का व्यक्तित्व और उसका समाज पर प्रभाव. पटना: बिहार साहित्य परिषद.
- कबीरदास और सामाजिक न्याय: अग्रवाल, सुमन (2019). कबीर के सामाजिक न्याय के विचारों का आज के समाज पर प्रभाव. लखनऊ: साहित्य निकेतन.
- कबीरदास की समकालीन प्रासंगिकता: मिश्र, संजय (2021). कबीरदास के विचारों की समकालीन प्रासंगिकता. भोपाल: मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी.
- कबीर की वाणी और आधुनिक समाज: जैन, अनीता (2017). कबीरदास की वाणी का आधुनिक समाज पर प्रभाव. दिल्ली: साहित्य भारती.
- कबीर ग्रन्थावली, पृ 172

• भक्तिकाव्य और लोक जीवन, पृ. 42, डॉ. रामकुमार मिश्र।

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-02, Issue-01, Sept.- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-Sept-2024/03

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

महिमा और डॉ0 नवनीता भाटिया

For publication of research paper title

"महाकवि कबीरदास की स्पनाओं का आधुनिक जीवन मूल्यों को परिवर्तित करने में योगदान"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-02, Issue-01, Month September, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com